



आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोमुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से सम्बन्धित मासिक पत्रिका।

आत्म-प्रकाश

॥ ॐ परम तत्वाय नाथयणाय गुरुभ्यो नमः ॥

वर्ष : 02

अंक : 05

अगस्त 2012

विक्रम संवत् 2069

आशीर्वाद
प्रेरक संस्थापक

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी)

★

सम्पादक

कैलाश चन्द्र श्रीमाली

★

संयोजक

विनीत श्रीमाली

★

प्रकाशक एवं स्वामित्व

कैलाश चन्द्र श्रीमाली
प्राचीन मंत्र-यंत्र विज्ञान

★

मुद्रक

'सुदर्शन प्रिन्टर्स'

487/505, पीरागढ़ी,
रोहतक रोड, नई दिल्ली-87
से मुद्रित

★

कार्यालय :

प्राचीन मंत्र-यंत्र विज्ञान
1-सी पंचवटी कॉलोनी,
रातानाडा, जोधपुर
से प्रकाशित

मूल्य भारत में

एक प्रति : 24/-
वार्षिक : 310/-

सम्पादक की कलम से

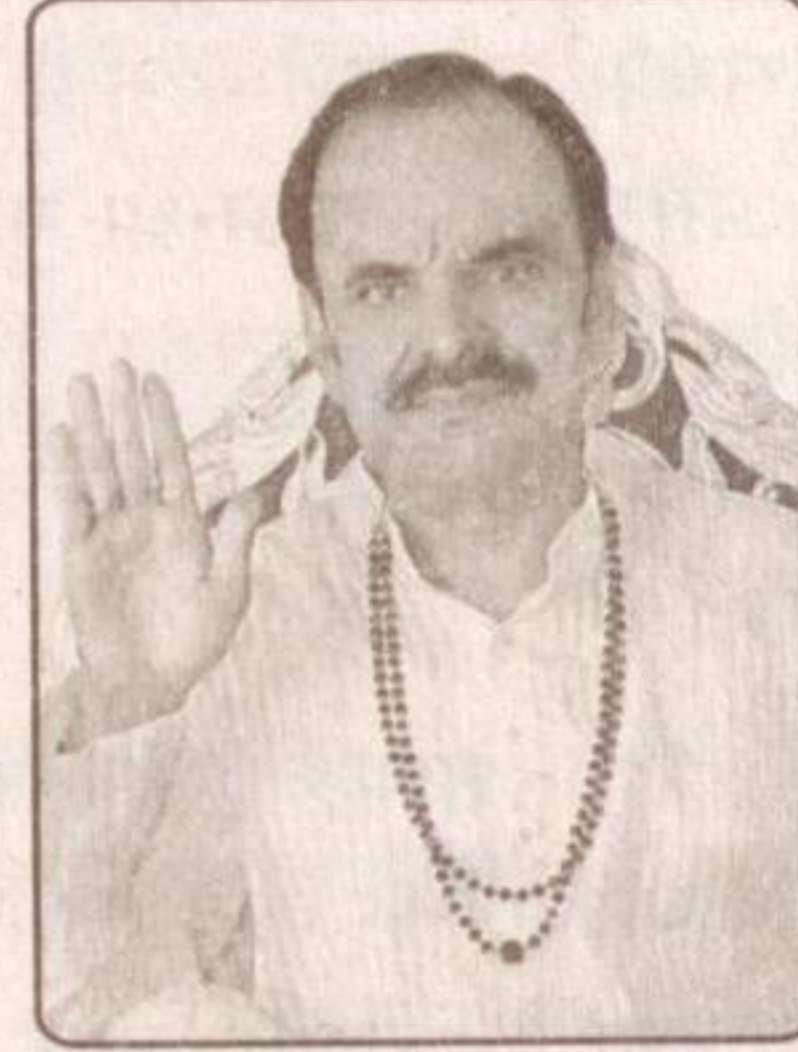
अपनो से अपनी बात

प्रिय आत्मन,

शुभाशीर्वाद !

कोई भी सामान्य मनुष्य शिष्य इसलिये बनता है कि वह सांसारिक बन्धनों से मुक्त हो सके। और यहीं प्रार्थना शिष्य अपने गुरु या इष्ट से करता है। इसलिए वह गुरु को धारण करता है।

यह देह सद्गुरुदेव की दी हुई है, तन-मन ज्ञान रूपी धन सब सद्गुरुदेव का दिया हुआ है इसे अपने शिष्यों को पूर्ण समर्पित करना है जिससे प्रत्येक शिष्य सद्गुरुदेवमय बन सके। सद्गुरुदेव ने एक बार गंगोत्री में गौ मुख के पास ऊंची चोटी पर ले जाकर मुझसे कहा था कि इस जलते हुए संसार को देखो इनके आंसुओं को देखो तुम्हें संसार की पीड़ा को आंसुओं को खुशी और आनन्द में बदलना है। मैंने कहा कि मैं एक छोटी सी बूंद इस संसार की जलन को आग को कैसे बुझा सकता हूँ। तब सद्गुरुदेव ने कहा कि यह आग बुझे ना बुझे परन्तु तुम्हें अपना अनवरत प्रयास जारी रखना है। अपने आप को संसार के लिए मिटा देना है। उन्हीं की आज्ञा को शिरोधार्य रखते हुए ऐसी ही क्रिया की कड़ी में आपके साथ चारों धामों में श्रेष्ठतम धाम बद्रीनाथ यात्रा को सम्पन्न कर सका। सही अर्थों में यह मेरे जीवन के अमूल्य और अविस्मरणीय क्षण थे जो सद्गुरुदेव के आशीर्वाद से और आपके सहयोग से यह यात्रा पूर्ण सफल और साधनात्मक दृष्टि से उच्चतम सोपानोयुक्त रही। मेरा तो हर प्रयास, हर क्रिया आपमें ही रचना पचना और आपको ही अपने भीतर समाहित करने का रहता है और यह क्रिया निरन्तर निरन्तर अविरल रूप



से चलती रहेगी। अविरल इस यात्रा में ईर्ष्यावश अथवा अपनी अहम तुष्टी के लिए आलोचक थोथी वर्जनाओं की वजह से कोई जबरदस्ती संकल्प दिला दे कसमें दिला दें। आपको बन्धनों में बांधने की कोशिश हेतु कसमें दिलायें। परन्तु आप इन संकल्पों और कसमों के प्रपंच में नहीं पड़ते क्योंकि हमेशा से ही सद्गुरुदेव का ध्येय अपने शिष्यों को मुक्त आकाश में विचरण के लिए ज्ञान रूपी पंख देना है, चेतना रूपी शक्ति देना है, इसलिए तो सद्गुरुदेव हमेशा कहते हैं कि "हंसा उड़ें गगन की ओर"।

थोथी कसमों और संकल्पों से जीवन के सांसारिक बन्धनों से मुक्त नहीं हुआ जाता और न ही शिष्य कोई बैल या भेड़ है। कोई भी यदि शिष्यों को भेड़ों या बैलों की तरह हांकता है तो वह सच्चा मार्गदर्शक नहीं, सही गुरु की चेतना का भाव शिष्यों को हंस बनाने की क्रिया करना है। अनगढ़ और अन्धा गुरु ही अपने शिष्य को खण्ड-खण्ड में बांटता है और यह धारणा बनाने की क्रिया के फलस्वरूप चिकनी चुपडी बाते कहानियां, मजाक आदि करते रहते हैं। जहां गुरु भी अंधा और शिष्य भी अन्धा हो वहां क्या जीवन की स्थिति होती है। यह आप स्वयं समझ सकते हैं।

शिष्यत्व भाव ग्रहण करने का मंतव्य भी यही है कि सांसारिक वर्जनाओं को तोड़ने की क्रिया प्रारम्भ करें। न कि अनेक-अनेक वर्जनाओं को अपने ऊपर लादने के लिए। विचार आपको करना है। चेतना और शक्ति सद्गुरुदेव की है आप कितना चेतना और शक्ति को आत्मसात कर सकते हैं। छोड़ो यह थोथे संकल्प और थोथी कसमें।

बद्रीनाथ धाम में साक्षी भूत रूप में अनेक-अनेक साधनाएँ और क्रियाएँ सम्पन्न की और सैकड़ों साधकों ने यह एहसास किया कि इस तरह की यात्रा और साधना का आयोजन कोई श्रेष्ठतम गुरु के सान्निध्य में ही में सब कुछ सम्भव है और विशेष रूप से सभी ने यह महसूस किया कि गुरुदेव जो कहते हैं वे क्रियाएँ अवश्य ही पूर्ण करते हैं। और सही अर्थों में मेरा उद्देश्य साधनाओं में गतिशीलता और पूर्णता प्रदान कराना है। उन्हें पूर्ण चेतना के साथ शिष्यों में आत्मसात किया जाये। मैं थोथी बातों में चीखने चिल्लाने, लाग-लपेट में निरर्थक, संकल्प, कसमों में अपने शिष्यों को नहीं उलझाता हूँ। वरन शिष्यों के जीवन की अनेक-अनेक उलझनों को समाप्त करने की क्रिया और चेतना देता हूँ।

बद्रीनाथ यात्रा के तीन सप्ताह के भीतर ही अमरकंटक में गुरु पूर्णिमा महोत्सव बहुत ही दिव्यतम और श्रेष्ठतम रूप में सम्पन्न हुआ। दिव्यता और श्रेष्ठता इस बात में रही कि इस बार की गुरु पूर्णिमा कैलाश सिद्धाश्रम द्वारा अपने शिष्यों के लिए नर्मदा उद्गम स्थल के पास आश्रम के लिए नियोजित भूमि पर सम्पन्न की गई। हजारों-हजारों साधकों ने आश्रम की पूर्णता के लिए सहज भाव से और आगे बढ़ कर सहयोग हेतु कार सेवा का निर्णय लिया। ऐसे साधक सही अर्थों में साधुवाद के पात्र हैं।

कैलाश सिद्धाश्रम दिल्ली में सैकड़ों-सैकड़ों शिष्यों के प्यार और निष्ठा के फलस्वरूप सात जुलाई को गुरुदेव और माताजी के सुखमय गृहस्थ जीवन के पर्व का जो आयोजन किया उससे विशेष रूप से दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, जम्भू, हिमाचल और उत्तर प्रदेश के साधकों और शिष्यों ने आनन्द और हर्ष का अनुभव किया।

आपका अपना
कैलाश चन्द्र श्रीमाली